Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **26.01.2018** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़्ल है हम अहमदियों पर कि हमारे अधिकांश छोटे बड़े इस बात को समझते हैं कि यदि व्याकुल होकर, गिड़गिड़ा कर, विनयता के साथ अल्लाह तआला के समक्ष झुका जाए तथा उससे दुआ मांगी जाए तो अल्लाह तआला दुआओं को सुनता है और कई बार दुआ की क़बूलियत की ऐसी घटनाएँ होती हैं जो ग़ैरों को भी आश्चर्य में डाल देती हैं।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर दुआ का दर्शन-शास्त्र बयान करते हुए फ़रमाया कि एक बच्चा जब भूख से व्याकुल होकर दूध के लिए चिल्लाता और चींख़ता है तो माँ की छाती में दूध जोश मार कर आ जाता है। बच्चा दुआ का नाम भी नहीं जानता किन्तु उसकी चींखें दूध को कैसे खींच लाती हैं, फ़रमाया कि कई बार देखा गया है कि मांएँ दूध को अनुभव भी नहीं करतीं परन्तु बच्चे का चिल्लाना दूध को खींच लाता है। आप फ़रमाते हैं- तो क्या हमारी चींख़ें जब अल्लाह तआला के समक्ष हों तो वे कुछ भी खींच कर नहीं ला सकतीं? आता है, तथा सब कुछ आता है परन्तु आँखों के अन्धे जो विद्वान और दर्शन शास्त्री बने बैठे हैं, वे नहीं देख सकते। आपने फ़रमाया कि बच्चे को जो लगाव माँ से है इस सम्बंध को इंसान अपने मस्तिष्क में रखकर यदि दुआ की फ़लास्फ़ी पर विचार करे तो वह बड़ी सरल एंव सहज लगती है।

अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़्ल है हम अहमदियों पर कि हमारे अधिकांश छोटे बड़े इस बात को समझते हैं कि यदि व्याकुल होकर, गिड़गिड़ा कर, विनयता के साथ अल्लाह तआला के समक्ष झुका जाए तथा उससे दुआ मांगी जाए तो अल्लाह तआला दुआओं को सुनता है और कई बार दुआ की क़बूलियत की ऐसी घटनाएँ होती हैं जो ग़ैरों को भी आश्चर्य में डाल देती हैं। कुछ ऐसी घटनाएँ विभिन्न रिपोर्टस में आती हैं जिन्हें मैं इस समय पेश करूँगा।

नाज़िर दावत इलल्लाह क़ादियान लिखते हैं कि होशियारपुर ज़िले के अमीर ने बताया कि कुछ वर्ष पूर्व उनके गाँव खेड़ा अछरवाल में बारिश न होने के कारण गाँव वाले बड़े परेशान थे यहाँ तक कि कुएँ का पानी भी निचले स्तर तक पहुंच गया था। यहाँ की अधिकांश हिन्दु आबादी ने वहाँ के मुअल्लिम को दुआ करने को कहा। पूर्वी पंजाब में मुअल्लिम को मियाँ जी कहते हैं। उन्हें विश्वास था कि अहमदी मुअल्लिम को दुआ करने के लिए कहेंगे तो अवश्य वर्षा होगी। अतः हमारे मुअल्लिम ने पहले तो उनको इस्लामी दुआ के आदाब बताए और अल्लाह तआला के गुण बताए फिर दुआ कराई। अल्लाह तआला ने अहमदिया जमाअत के इस मुअल्लिम की दुआ को क़बूल फ़रमाया तथा अपनी कृपा से दो तीन घन्टे मूसलाधार बारिश बरसा दी तथा अपने समीउद्दुआ (दुआ को सुनने वाला) होने का प्रमाण दिया। इस घटना का अल्लाह तआला की कृपा से पूरे गाँव पर अच्छा प्रभाव हुआ और गाँव वालों ने उसी समय कहा कि अहमदियों की दुआ के कारण वर्षा हुई।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- कुछ स्थानों पर बारिश का होना ख़ुदा तआला के समर्थन तथा क़बूलियत का निशान बन जाता है तो कुछ स्थानों पर बारिश का रुकना दुआ की क़बूलियत का निशान बन जाता है। ग़ैर चाहे इस्लाम क़बूल करें या न करें परन्तु इस बात को अवश्य स्वीकार करते हैं कि इस्लाम का ख़ुदा दुआओं को सुनने वाला ख़ुदा है।

गिनी बसाओ के मुअल्लिम अब्दुल्लाह साहब कहते हैं कि हम एक गाँव सीन चाँगका नगसा में तबलीग़ के लिए गए और लोगों को जमा करके उन्हें अहमदिया जमाअत का पैग़ाम पहुंचाया। जब उन्हें तबलीग़ की जा रही थी उसी बीच तेज़ बारिश आरम्भ हो गई तथा बारिश के शोर के कारण, ये कहते हैं कि मेरी आवाज़ उपस्थित लोगों तक नहीं पहुंच रही थी और यूँ लग रहा था कि अभी लोग वापस चले जाएँगे। कहते हैं, उस समय मैंने दुआ की, कि ऐ अल्लाह, बारिश भी तेरी है और जो पैग़ाम मैं लेकर आया हूँ वह भी तेरा है लेकिन बारिश के कारण ये लोग तेरा पैग़ाम नहीं सुन रहे और उठने वाले हैं। कहते हैं कि दुआ करने की देर थी कि अल्लाह तआला ने बारिश को थमा दिया। कहते हैं कि वहाँ उपास्थित लगभग एक सौ पचास लोगों को तबलीग़ की गई और अलहमदु लिल्लाह तबलीग़ के बाद सभी लोगों ने बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

यहाँ, जहाँ बारिश रुकने की दुआ के बाद हमारे मुअल्लिम के ईमान को मज़बूत किया, वहाँ उन लोगों को भी दुआओं को सुनने वाले ख़ुदा को दिखाया। लोग कहते हैं कि ख़ुदा किस प्रकार दिखाई देता है, ख़ुदा इसी प्रकार अपनी शक्ति के दृश्य दिखाकर नज़र आता है। वही लोग जो वर्षा के कारण वहाँ से उठकर जाने वाले थे, अल्लाह के फ़ज़्ल को देखकर न केवल बैठे रहे बल्कि अहमदियत और वास्तविक इस्लाम को क़बूल किया।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अब मौसमों से हट कर दुआ की क़बूलियत के कुछ और वृत्तांत हैं, वे पेश करता हूँ। हमारा ख़ुदा केवल ऋतुओं का ख़ुदा नहीं है अपितु सर्वशक्तिमान तथा हर प्रकार की दुआएँ सुनने वाला ख़ुदा है। उसकी असंख्य विशेषताएँ हैं तथा अपने गुणों के जलवे वह दिखाता है।

बेनिन से सिलसिले के मुअल्लिम मतीन साहब कहते हैं कि कुछ दिन पूर्व एक नौ-मुबाए दोस्त आए कि मुरब्बी साहब हमारे घर आएँ, मेरी बीवी की हालत बड़ी ख़राब है। मुअल्लिम साहब कहते हैं, मैं अपनी बीवी को लेकर उनके घर चला गया क्यूँकि उनकी पत्नि की गर्भावस्था थी तथा उसको बड़ा तेज़ बुख़ार था और तेज़ बुख़ार के कारण, गर्भ सुकड़ने के कारण बच्चे का जन्म नहीं हो पा रहा था। वे कहने लगे कि पिछली दो बार भी ऐसा ही हो चुका है, जिसमें या तो बच्चा बच सकता था या माता बच सकती थी। अतः दोनों बार उन्होंने माँ को बचाने का प्रयास किया तथा संतान को बलिदान करना पड़ा और अब यह तीसरी बार ऐसा ही हो रहा है। मुअल्लिम साहब ने कहा कि ऐसी अवस्था में हम दवा के साथ दुआ भी करते हैं। अतः कहते हैं कि मैंने अल्लाह तआला के पवित्र नामों का वास्ता देकर रसूल-ए-मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वास्ता देकर दुआ आरम्भ की और दुआ पूरी करने पर सूरः फ़ातिहः पढ़ कर पानी पर फूंका और उस महिला को पिलाया। कहते हैं, इस प्रकार मैंने दो तीन बार किया और पानी फूंक कर महिला को पिलाने के लिए भिजवाया, तीसरी बार पति प्रसन्नता के साथ आया कि अल्लाह तआला ने मेरी पत्नि भी बचा ली और बेटा भी दे दिया और उस नौ-मुबाए का ईमान अल्लाह तआला की कृपा से, ख़ुदा तआला की ज़ात पर और दुआ की क़बूलियत पर और अधिक हो गया। तब से यह स्वयं भी यथावत ध्यान के साथ, विनयता पूर्वक, तड़प के साथ दुआएँ करने लग गया।

फिर कर्नाटक इन्डिया से वहाँ के ज़िले के अमीर लिखते हैं कि वहाँ के जमाअत के एक सदर साहब को ब्रेन टयूमर हो गया और हस्पताल में दाख़िल हो गए। डाक्टरों ने कहा कि इनका उपचार सम्भव नहीं है, आप्रेशन करते समय जान भी जा सकती है। उन्होंने तुरन्त यहाँ मुझे दुआ के लिए भी लिखा तथा मेरा जवाब भी उनको गया कि अल्लाह तआला स्वास्थ प्रदान करे। कहते हैं कि एक महीने बाद डाक्टरों ने दोबारा उनका परीक्षण किया तो चकित

रह गए कि ब्रन टयूमर का नाम व निशान तक नहीं है। यह केवल अल्लाह तआला का फ़ज़्ल था तथा दुआओं का ही परिणाम था कि हुसैन साहब पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गए।

मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहब गिनाकरी लिखते हैं कि एक निष्ठावान नौ-मुबाए नौजवान सुलेमान साहब ने अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहा कि वे स्वयं को वक़्फ़ करके जमाअत की सेवा करना चाहते हैं। अतः हमने उन्हें सीरालियोन जामिअः अहमदियः में दाख़िल होने की सलाह दी, उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया, तय्यारी शुरु हो गई। कहते हैं जब हमने उनके माता-पिता को, जो अभी अहमदी नहीं हुए थे, उनको मिशन हाउस बुलवाया ताकि उनकी स्वीकृति प्राप्त की जा सके तो प्रत्यक्षतः वे बड़े प्रसन्न हुए तथा पूरी जानकारी प्राप्त करके दो दिनों के बाद वापस आने के लिए कह गए। वापस जाकर उन्होंने अपने मौलवी से सलाह की तो उसने उन्हें बहका दिया तथा हमारे विरुद्ध पुलिस में मुक़दमा लिखवा दिया कि अहमदिया जमाअत एक ग़ैर मुस्लिम और आतंकवादी जमाअत है तथा यह लड़के को भी भटका रही है और कट्टर पंथी बना रही है। कहते हैं, इस पर हमें बड़ी दुविधा हुई, मुझे भी उन्होंने लिखा दुआ के लिए तथा इस प्रकार मैंने भी उनको जवाब दिया कि अल्लाह तआला अपनी कृपा करे, प्रयास करते रहें, दुआ भी करते रहें। अतः कहते हैं, जब पुलिस ने पूछ ताछ की तथा जमाअत का परिचय पुलिस को कराया गया तथा लीफ़ लैट्स इत्यादि दिए गए तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पुलिस कमिश्नर ने न केवल केस ख़ारिज कर दिया बल्कि कहने लगा कि मुझे तो इनका बताया हुआ इस्लाम अधिक उचित एवं शांति पूर्ण लगता है। पुलिस कमिश्नर ने कहा कि मुझे और अधिक जानकारी उपलब्ध कराएँ, मैं भी जमाअत में शामिल होना चाहता हूँ।

अल्लाह तआला किस प्रकार अहमदियों को दुआ की क़बूलियत के माध्यम से ईमान में सुदृढ़ता और ख़िलाफ़त पर विश्वास क़ायम फ़रमाता है। इस विषय में अपनी एक घटना लिखते हुए माली के इदरीस तरावड़े साहब कहते हैं कि 2008 में ख़िलाफ़त जुबली के जलसे में शामिल हुआ था उस समय मैं मुर्गियों का कारोबार करता था और मैं मुर्गियाँ छोड़ कर ग़ाना चला गया, पीछे मेरी सारी मुर्गियाँ मर गईं। तो जिस आदमी के पैसों से मैं यह कारोबार करता था उसको जब पता चला कि मैं अहमदी हूँ तथा अहमदियों के जलसे में गया हूँ और मुर्गियाँ मर गईं हैं तो वह विरोध में और भी अन्धा हो गया और मेरे वापस आने के बाद मुझे पैग़ाम भेजा कि कि एक सप्ताह के भीतर मेरे एक लाख पचास हज़ार फ्रांक सीफ़ा वापस करो। कहते हैं, मैं बड़ा परेशान हुआ कि मेरे पास तो रक़म नहीं है, यह विरोधी मुझे बड़ा अपमानित करेगा। कहते हैं, सारी रात मैंने बड़ी दुआ की कि अल्लाह तआला मेरे लिए कोई व्यवस्था कर दे, मैं तो ख़लीफ़ः के प्रेम में जलसे में शामिल होने के लिए गया था। कहते हैं कि मुझे सपने में दिखाया गया कि एक ट्रक से कुछ अनाज गिरा हुआ है जिसे मैं समेट रहा हूँ। कहते हैं, मैं सवेरे सवेरे उस स्थान पर गया तो वहाँ ट्रक तो कोई नहीं था किन्तु अनाज गिरा हुआ था जो मैं समेटने लगा तो सहसा एक काले रंग का प्लास्टिक का लिफ़ाफ़ा मिला। उसको खोला तो उसमें एक लाख अस्सी हज़ार फ्रांक सीफ़ा थे। मैंने वहाँ के स्थानीय लोगों से पूछा तो बताया गया कि यहाँ रात एक ट्रक खड़ा था जो अब सैनेगाल की ओर चला गया है। मैंने लोगों से कहा यहाँ यह धन राशि मिली है यदि किसी की हो तो बताकर ले ले, कोई आदमी नहीं आया। इस प्रकार जब ऋण वसूल करने वाला आया तथा अपमान पर उतर आया तो मैंने कहा संतोष रखो मैं तुम्हें रक़म दे देता हूँ, अल्लाह ने मेरे लिए व्यवस्था कर दी है और मैंने उसकी वह रक़म वापस कर दी। अब कहते हैं कई वर्ष बीत चुके हैं इस रक़म का स्वामी होने का वहाँ किसी ने दावा नहीं किया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- ये कुछ घटनाएँ हैं दुआ की क़बूलियत की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुदरत के नियम में दुआ की क़बूलियत के उदाहरण उपलब्ध हैं। उसी नियम के अंतर्गत हर ज़माने में ख़ुदा तआला जीवित नमूने भेजता है और यदि दुआ की क़बूलियत के जीवित उदाहरणों का अंश बनना है तो फिर कुछ नियम और शर्तें हैं जिनको पूरा करना अनिवार्य है। दुआ क़बूल होने के लिए आवश्यक है कि शुभ कर्म और विश्वास पैदा करो। जो व्यक्ति अपना विश्वास ठीक नहीं करता तथा शुभ कर्म नहीं करता, उनको सुन्दर नहीं बनाता

और दुआ करता है, वह मानो ख़ुदा तआला की परीक्षा लेता है। अतः ईमान को जहाँ आस्था की दृष्टि से मज़बूत करने की आवश्यकता है वहाँ कर्मों की हालत को भी ख़ुदा तआला की प्रसन्नता तथा उसके आदेशानुसार ढालने की आवश्यकता है। यह नहीं हो सकता कि हम वैसे तो अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार पाँच समय की नमाज़ों पर ध्यान न दें, मूल हक़ अदा न करें लोगों के तथा जब कठिनाई में घिर जाएँ तो उस समय फिर हमें अल्लाह भी याद आ जाए, लोगों के अधिकार देने भी याद आ जाएँ। पहले अपनी हालतों को ठीक करना होगा, केवल आस्था की अवस्था के ठीक होने से ही काम पूरा नहीं होता जब तक शुभ कर्म न हों और शुभ कर्म यही है कि अल्लाह तआला के हक़ भी अदा किए जाएँ तथा उसके प्राणियों के हक़ भी अदा किए जाएँ। यह होगा तो तो अल्लाह तआला फिर दुआओं को भी सुनता है। अल्लाह तआला हम सबको उसके आदेशानुसार अपने जीवन को ढालने का सामर्थ्य प्रदान करे तथा इबादतों और दुआओं के हक़ सदैव अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

नमाज़ के पश्चात दो जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाउँगा। पहला जनाज़ा मुकर्रम चौधरी नेमतुल्लाह साही साहब का है, 15 जनवरी को कैनेडा में इनका निधन हुआ। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। आपके परिवार में अहमदियत हज़रत हुसैन बी बी साहिबा वालिदा हज़रत चौधरी ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब के द्वारा आई थी, इन्होंने क़ादियान जाकर बैअत की थी। चौधरी साहब को जमाअत की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, अमीर जमाअत हैदराबाद रहे, अन्सारुल्लाह के ज़िला हैदराबाद के नाज़िम रहे, क़ायद ख़ुद्दामुल अहमदियः हैदराबाद रहे, नाज़िम जायदाद सदर अंजुमन अहमदियः रबवा पाकिस्तान रहे। बचपन से ही यथावत तहज्जुद पढ़ने वाले थे तथा अन्तिम समय तक इसके लिए प्रयासरत रहे, जमाअत के साथ नमाज़ नियमबद्ध रूप से अदा करते थे। दुआ पर आपको विशेष विश्वास था। ख़िलाफ़त से बड़ी निष्ठा थी, जसला सालाना में शामिल होने को बड़ा महत्त्व देते थे, अत्यंत संतोषी एवं श्रद्धा पूर्ण थे तथा दूसरों की कठिनाईयों का बड़ा ध्यान रखने वाले, अपने ऊपर बड़ा नियन्त्रण, बड़े धीमे, ठण्डी प्रकृति के थे। छोटी मोटी बीमारी अथवा कठिनाई का कभी वर्णन नहीं किया। नौकरी के समय बड़ा अच्छा वेतन होता था इनका, इसके बावजूद कभी अपने ऊपर अधिक ख़र्च नहीं करते थे। बड़ा नाम था इनका टैक्सटाईल इंडस्ट्री में। संतान को सदैव ख़लीफ़-ए-वक़्त को पत्र लिखने की प्रेरणा देते रहते थे। परिजनों में तीन बेटियाँ और दो बेटे यादगार के रूप में छोड़े हैं। अल्लाह तआला की कृपा से आप मूसी थे। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जे बुलन्द फ़रमाए तथा इनकी संतान को भी इनकी नेकियाँ जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा जफ़रुल्लाह ख़ान बटर साहब, करतो शेख़ूपुरा का है, इनकी 9 जनवरी को वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। पैदायशी अहमदी थे। आपके वालिद चौधरी अल्लाह दित्ता साहब ने 1928 में अहमदियत क़बूल की थी। अपने गाँव करतो शेख़ू पुरा में सदर जमाअत के रूप में सेवा का सौभाग्य मिला। तहज्जुद की नमाज़ नियमबद्ध रूप से अदा करने वाले, पाँचों समय की नमाज़ अदा करने वाले, ख़ुत्बात नियमबद्ध रूप से सुनने वाले, चन्दों में बड़े अनुशासित, स्वभाव में बड़ी सादगी थी। परिजनों में तीन बेटियाँ और तीन बेटे यादगार के रूप में छोड़े हैं। अल्लाह तआला इनको, इनकी नेकियाँ इनकी संतान में जारी रखे तथा जिस भावना तथा कर्त्तव्य से उन्होंने अपने बेटे को वक़्फ़ किया था, अल्लाह तआला इनके बेटे को भी वास्तव में वक़्फ़ की रूह के साथ अपने वक़्फ़ को निभाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, मरहूम के दर्जे बुलन्द फ़रमाए, क्षमाशीलता तथा दया का व्यवहार फ़रमाए।

TOLL FREE NO: 180030102131